SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

सीमा कुशवाह, पी.एच–डी., शिक्षा विभाग
आई.पी.एस. कॉलेज, ग्वालियर, मध्यप्रदेश
नरेश चन्देल, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors

सीमा कुशवाह, पी.एच–डी.
नरेश चन्देल, शोधार्थी

E-mail : seemakushwah1979@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/02/2025
Revised on : 19/04/2025
Accepted on : 29/04/2025
Overall Similarity : 04% on 21/04/2025

शोध सार

यह अध्ययन शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि के पारस्परिक संबंध को समझने का प्रयास करता है। शोध में यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि क्या लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धियों में कोई सार्थक अंतर है तथा क्या अभिवृत्ति का शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव पड़ता है। शोध पत्र हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। ग्वालियर नगर के कुल 50 विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है। विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के लिए डॉ. टी. एस. सोढी द्वारा विकसित सोढी का अभिवृत्ति मापदंड का प्रयोग प्रामाणिक उपकरण के रूप में किया गया तथा वहीं शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों का पिछले वर्ष का परीक्षा परिणाम लिया गया है। निष्कर्षतः पाया गया कि छात्रों और छात्राओं के बीच अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई विशेष अंतर नहीं है, तथा उनकी अभिवृत्ति का शैक्षिक उपलब्धि पर सीमित प्रभाव देखा गया। यह शोध शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी एवं समावेशी बनाने हेतु सुझाव प्रदान करता है।

मुख्य शब्द

विद्यार्थी, अभिवृत्ति, शैक्षिक उपलब्धि.

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास की आधारशिला होती है। विद्यार्थियों की प्रगति केवल उनके बौद्धिक स्तर पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि उनके मानसिक, सामाजिक तथा भावनात्मक पहलुओं पर भी आधारित होती है। इस संदर्भ में 'अभिवृत्ति'

एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक घटक के रूप में सामने आता है, जो किसी भी विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धियों को गहराई से प्रभावित करता है। विशेषकर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, संसाधनों की उपलब्धता, पारिवारिक सहयोग और शिक्षण गुणवत्ता जैसे अनेक कारकों के साथ–साथ उनकी व्यक्तिगत अभिवृत्तियाँ भी उनकी शैक्षिक सफलता को प्रभावित करती हैं।

अभिवृत्ति

ऑलपोर्ट (1935) के अनुसार:"अभिवृत्ति व्यक्ति की वह मानसिक एवं तंत्रिकीय स्थिति है, जो अनुभव के आधार पर विकसित होती है और व्यक्ति की प्रतिक्रियाओं को किसी वस्तु या परिस्थिति की ओर व्यवस्थित रूप से प्रभावित करती है।"

क्रो एंड क्रो (1956) के अनुसार:"अभिवृत्ति एक सीखी गई प्रवृत्ति है, जिसके माध्यम से व्यक्ति किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थिति के प्रति अपना दृष्टिकोण, रुचि, पसंद–नापसंद एवं प्रतिक्रिया दर्शाता है।"

अभिवृत्ति व्यक्ति की मानसिक एवं भावनात्मक प्रवृत्ति होती है, जो किसी विषय, वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति के प्रति उसके झुकाव को दर्शाती है। यह प्रवृत्ति सकारात्मक, नकारात्मक या तटस्थ हो सकती है और व्यक्ति के अनुभव, शिक्षा, सामाजिक परिवेश तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि से विकसित होती है। अभिवृत्ति व्यक्ति की सोच, भावना और व्यवहार को दिशा देती है तथा उसके निर्णयों एवं प्रतिक्रियाओं को प्रभावित करती है। यह एक प्रकार की आंतरिक स्थिति होती है जो बाह्य व्यवहार में प्रकट होती है। विद्यार्थी की अध्ययन के प्रति अभिवृत्ति उसके सीखने की गति और गुणवत्ता को भी प्रभावित करती है।

शैक्षिक उपलब्धि

गेट्स (1946) के अनुसार "शैक्षिक उपलब्धि से आशय उस स्तर से है, जिसे विद्यार्थी ने किसी शैक्षिक लक्ष्य को प्राप्त करने में दर्शाया हो, जो परीक्षा, परीक्षण या मूल्यांकन के माध्यम से मापा जाता है।"

बूमन और होवर्ड (1963) के अनुसार "शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास का माप है, जो पाठ्यक्रम, कक्षा गतिविधियों, परीक्षाओं एवं व्यवहार के माध्यम से अभिव्यक्त होता है।"

शैक्षिक उपलब्धि उस स्तर को कहा जाता है, जिसे विद्यार्थी ने अध्ययन के क्षेत्र में प्राप्त किया है। यह उपलब्धि परीक्षाओं में प्राप्त अंकों, कक्षा में सहभागिता, प्रोजेक्ट्स, एवं व्यवहारिक दक्षताओं के माध्यम से मापी जाती है। यह ज्ञान, समझ, कौशल और विचारशीलता का प्रतिफल होती है, जिसे विद्यार्थी अपने निरंतर प्रयासों और अध्ययन के माध्यम से अर्जित करता है। शैक्षिक उपलब्धि को कई कारक प्रभावित करते हैं, जैसे शिक्षण विधि, संसाधनों की उपलब्धता, पारिवारिक सहयोग एवं स्वयं की लगन। उच्च शैक्षिक उपलब्धि भविष्य में अच्छे करियर विकल्पों और जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती है।

अभिवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध

अभिवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धि के बीच एक घनिष्ठ संबंध होता है। एक सकारात्मक अभिवृत्ति रखने वाला विद्यार्थी अध्ययन के प्रति उत्साही रहता है, शिक्षकों के प्रति सम्मानजनक दृष्टिकोण रखता है और आत्म–प्रेरणा से कार्य करता है। इसके विपरीत, नकारात्मक अभिवृत्तियाँ जैसे उदासीनता, भय या आत्म–संदेह शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करती हैं। अनेक शोधों से यह प्रमाणित हुआ है कि जिन विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति रुचि, आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच एवं लक्ष्यबद्धता होती है, उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ अपेक्षाकृत अधिक होती हैं।

विशेषकर शासकीय विद्यालयों में जहाँ संसाधनों की कमी, अध्यापकों की अनुपलब्धता अथवा पारिवारिक सहयोग का अभाव देखा जाता है, वहाँ विद्यार्थियों की आंतरिक प्रेरणा और अभिवृत्ति उनकी सफलता में निर्णायक भूमिका निभाती है। यदि विद्यार्थी की अभिवृत्ति सकारात्मक है, तो वह प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद सफलता प्राप्त कर सकता है।

भारत में विशेष रूप से ग्रामीण या अर्ध–शहरी क्षेत्रों के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं। ऐसी स्थिति में यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि उनकी अभिवृत्तियाँ किस प्रकार उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित कर रही हैं। यह अध्ययन न केवल छात्रों की व्यक्तिगत समस्याओं की पहचान में सहायक हो सकता है, बल्कि नीति निर्माताओं, शिक्षकों और अभिभावकों को भी यह दिशा देगा कि वे किस प्रकार विद्यार्थियों की सकारात्मक अभिवृत्ति को विकसित कर उनकी उपलब्धियों को बढ़ा सकते हैं। अभिवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धि के बीच एक स्पष्ट और प्रभावशाली संबंध विद्यमान है। विद्यार्थियों की सोच, दृष्टिकोण और मानसिक प्रवृत्तियाँ उनकी शिक्षा में सफलता या असफलता के निर्णायक कारण हो सकते हैं। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों के गहन अध्ययन द्वारा उनके शैक्षिक भविष्य को बेहतर बनाया जा सकता है। यह अध्ययन शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकता है।

शोध के उद्देश्य

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य रखे हैं:

1. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

शोध कार्य के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया है:

H_{01} शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

H_{02} शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

H_{03} शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा शासकीय छात्र–छात्राओं की परस्पर अभिवृत्ति एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करके अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव देखा गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु मध्यप्रदेश के ग्वालियर नगर के 5 शासकीय विद्यालयों में से 25 छात्र तथा 25 छात्राओं का चयन किया गया है अर्थात् कुल 50 विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है।

प्रदत्त संकलन के उपकरण

विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के लिए डॉ. टी. एस. सोढी द्वारा विकसित सोढी का अभिवृत्ति मापदंड का प्रयोग प्रामाणिक उपकरण के रूप में किया गया तथा वहीं शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों का पिछले वर्ष का परीक्षा परिणाम लिया गया है।

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया है:

- मध्यमान।
- प्रामाणिक विचलन।
- टी–टेस्ट।
- एनोवा।

तथ्यों का विश्लेषण

परिकल्पना 1

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 1: शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
शासकीय छात्र अभिवृत्ति	30.36	11.81	48	0.04
शासकीय छात्रायें अभिवृत्ति	30.48	11.49		

48 स्वतंत्रता अंश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.68 होता है तथा गणना से प्राप्त 'टी' का मान 0.04 प्राप्त हुआ है जो 0.01 स्तर पर टी के मान से कम है अतः असार्थक है। अतः शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना 2

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 2: शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
शासकीय छात्र शैक्षिक उपलब्धि	70.84	11.96	48	1.36
शासकीय छात्रायें शैक्षिक उपलब्धि	75.18	10.60		

48 स्वतंत्रता अंश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.68 होता है तथा गणना से प्राप्त 'टी' का मान 1.36 प्राप्त हुआ है जो 0.01 स्तर पर टी के मान से कम है अतः असार्थक है। अतः शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना 3

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 3: शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का प्रसरण विश्लेषण

स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्राश	मध्यमान वर्ग(प्रसरण)	एफ–अनुपात	परिणाम
समूहों के मध्य	4105.013	36	114.028	0.613	सार्थक नहीं
समूहों के अन्तर्गत	2417.167	13	185.936		

उपरोक्त परिकल्पना 3 सत्यापित करने एवं तालिका क्र. 3 के अनुसार समूहों के मध्य 2 स्वतंत्राश तथा समूहों के अन्तर्गत 49 पर एफ–अनुपात का मान 0.01 स्तर पर 5.07 होता है। गणना किया हुआ एफ–अनुपात का मान 0.613 प्राप्त हुआ है जो कि विश्वास स्तर के मान से कम है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अर्थात् शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता, इसका तात्पर्य यह है कि छात्र और छात्रायें दोनों ही अध्ययन, विद्यालय, शिक्षक, विषय और अपने भविष्य के प्रति लगभग समान दृष्टिकोण और भावना रखते हैं। यह मानवीय रूप में उस स्थिति को दर्शाता है, जहाँ दोनों वर्ग एक जैसी आशाओं, संघर्षों और प्रेरणाओं के साथ आगे बढ़ते हैं।

छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों में कोई विशेष भिन्नता नहीं होती, अर्थात् परीक्षा परिणामों और ज्ञान के स्तर पर वे एक–दूसरे के समकक्ष होते हैं। यह परिकल्पना इस बात पर बल देती है कि सफलता केवल लिंग पर आधारित नहीं होती, बल्कि यह परिश्रम, रुचि और अवसरों पर निर्भर करती है। इसमें हम यह समझ सकते हैं कि एक ही कक्षा में बैठा छात्र और छात्रा, समान परिस्थितियों में, एक जैसा प्रदर्शन कर सकते हैं यदि उन्हें समान समर्थन मिले।

तृतीय परिकल्पना यह सिद्ध करती है कि विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। यह विचार कुछ हद तक उस जिज्ञासा को जन्म देता है कि क्या केवल सकारात्मक सोच और दृष्टिकोण ही सफलता की गारंटी है, या इसके पीछे और भी कारक हैं जैसे परिवारिक पृष्ठभूमि, आर्थिक स्थिति, विद्यालय का वातावरण आदि। यदि किसी छात्र का अध्ययन के प्रति दृष्टिकोण अच्छा है, फिर भी यदि वह कमजोर शैक्षिक संसाधनों से जूझ रहा है, तो उसकी उपलब्धि पर प्रभाव पड़ सकता है।

इस प्रकार, ये तीनों कथन मानवीकरण की दृष्टि से विद्यार्थियों की मानसिकता, क्षमता और प्रदर्शन को एक समग्र दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करते हैं। ये परिकल्पनाएँ शोध में इस बात की जाँच करने के लिए आवश्यक हैं कि क्या वास्तव में लिंग, सोच और प्रदर्शन के बीच कोई अंतर या संबंध विद्यमान है, या ये केवल हमारी सामाजिक मान्यताओं का परिणाम हैं।

सुझाव

- विद्यालयों में ऐसी शिक्षण विधियाँ अपनाई जाएँ जो छात्र एवं छात्राओं के बीच किसी प्रकार का भेदभाव न करें, ताकि दोनों वर्ग समान अवसरों के साथ अपने अभिवृत्तियों और क्षमताओं का विकास कर सकें।
- विद्यार्थियों की सकारात्मक अभिवृत्ति को विकसित करने हेतु नियमित रूप से प्रेरक सत्र, करियर मार्गदर्शन और व्यक्तित्व विकास संबंधी कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को केवल परीक्षा आधारित न मानकर, व्यवहार, भागीदारी, कार्यशाला सहभागिता और कक्षा–गतिविधियों के आधार पर भी आंका जाए।
- शिक्षकों को ऐसी प्रशिक्षण प्रणाली से जोड़ा जाए जिससे वे विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों को पहचान कर उनके अनुसार शिक्षण रणनीतियाँ विकसित कर सकें।
- पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों, आत्म–प्रेरणा और समाजिक समरसता जैसे पहलुओं को शामिल किया जाए ताकि विद्यार्थी केवल अकादमिक नहीं, बल्कि एक संतुलित व्यक्तित्व के रूप में विकसित हो सकें।

संदर्भ सूची

1. मित्तल, एम.एल. (1987) *शिक्षा सिद्धांत,* लायल बुक डिपो, मेरठ।
2. माथुर, एस.एस. (1988) *शिक्षा मनोविज्ञान,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. मिश्र, रामआसरे (2020) *शिक्षा मूल्यांकन एवं अनुसंधान पद्धति,* ललिता पब्लिकेशन, इलाहाबाद।

4. मिश्रा, एस. के. (2017) *शिक्षा का समाजशास्त्र,* लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
5. नवल, नंदकिशोर (2015) *शिक्षा और मूल्य,* भारतीय बोध शोध संस्थान, वाराणसी।
6. पाठक, पी. डी. (2005) *शिक्षा मनोविज्ञान,* इकतीसवां संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
7. सिंह, अनिल कुमार (2019) *शिक्षण विधियाँ एवं अधिगम मनोविज्ञान,* राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. शर्मा, रमेश चंद्र (2018) *शिक्षा मनोविज्ञान,* विनीत प्रकाशन, मेरठ।

****